INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

(मुख्य परीक्षा हेतु)

Level – 1

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 1

राजस्थान का भूगोल + इतिहास + संस्कृति + भाषा

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – I हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – I)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/r46kn5

Online Order करें - https://shorturl.at/gilw7

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राजस्थान का भूगोल	
1.	स्थिति एवं विस्तार	1
2.	राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप	14
3.	मानसून तंत्र एवं जलवायु	24
4.	(अपवाह तंत्र) - नदियाँ, झीलें एवं बाँध	30
5.	राजस्थान की वन संपदा	52
6.	वन्य जीव-जंतु वन्य जीव संरक्षण एवं अभ्यारण्य	55
7.	मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण	59
8.	राजस्थान की प्रमुख फसलें	62
9.	जनसंख्या, जनसंख्या-घनत्व, साक्षरता, और लिंगानुपात	67
10.	राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र	73
11.	धात्विक एवं अधात्विक खनिज	76
12.	राजस्थान के ऊर्जा संसाधन : परम्परागत एवं गैरपरम्परागत	83
13.	राजस्थान के पर्यटन स्थल	92
14.	राजस्थान में यातायात के साधन	97
15.	पशुधन एवं पशु मेले (एक्स्ट्रा)	104
	इतिहास एवं संस्कृति	
1.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ • कालीबंगा , आहड़, गणेश्वर, बालाथल और बैराठ	110
2.	राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश	114
3.	प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था	158
4.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	166

5.	1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान	177
6.	राजस्थान में जनजाति एंव किसान आंदोलन	184
7.	प्रजामण्डल	195
8.	राजस्थान का एकीकरण	204
	कला एवं संस्कृति	
1.	राजस्थान की स्थापत्य कला, किले स्मारक महल एंव हवेलियाँ	209
2.	राजस्थान के मेले एवं त्यौहार	217
3.	लोक कला, लोक संगीत	227
4.	लोक नाट्य एवं लोक नृत्य	230
5.	राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत	236
6.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय • राजस्थान के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल	244
7.	लोक देवता एंव लोक देवियाँ	251
8.	राजस्थान के वस्त्र एंव आभूषण	257
9.	राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प	258
	राजस्थानी भाषा	
1.	राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ	264
2.	प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ एवं प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार	266
3.	राजस्थनी संत साहित्य एवं लोक साहित्य	270

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – I

स्थिति एवं विस्तार

राजस्थान का विस्तार -

इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझिए-

1. भूमध्य रेखा
2. कर्क रेखा
3. मकर रेखा
4. अक्षांश
5. देशांतर

इन मानचित्र को ध्यान से समझिए-

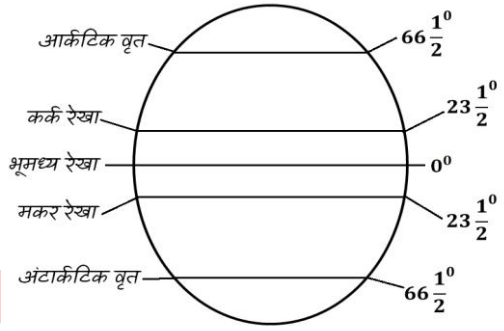

(मानचित्र न. I)

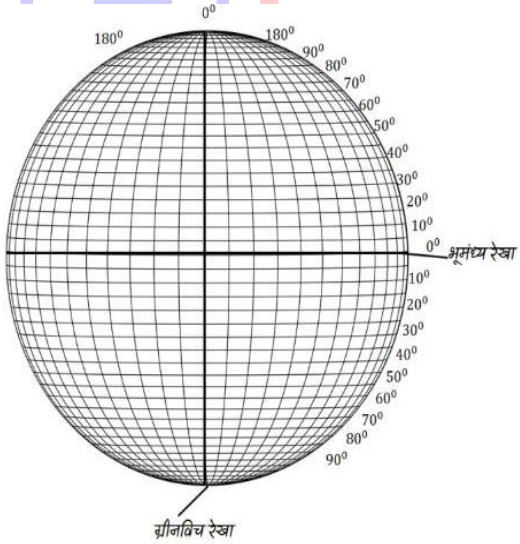

(मानचित्र न. – 2)

नोट -भूमध्य रेखा :- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा हैयह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है।
इस रेखा पर प्रायः वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा कहा जाता है।
विषुवत रेखा के उत्तरी ओर पर कर्क रेखा है व दक्षिण की ओर पर मकर रेखा है।

नोट- पृथ्वी/ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "**उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम**"में विभाजित किया गया है । इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते है।

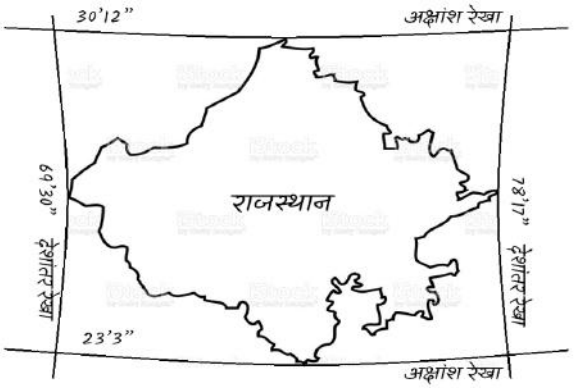

अक्षांश रेखाएं- वह रेखाएं जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अथार्त भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है। (देखें मानचित्र -I)
ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90 डिग्री उत्तरी गोलार्द्ध में और 90 डिग्री दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180 डिग्री है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181 होती है।

देशांतर रेखाएं- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360 डिग्री रेखाओं को देशांतर रेखाएं कहा जाता है। ग्रीनविच, जहां ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है, से गुजरने वाली याम्योत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस याम्योत्तर को प्रमुख याम्योत्तर कहते है। इसका मान देशांतर है तथा यहां से हम 180 डिग्री पूर्व या 180 डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

नोट –उपर्युक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक '**भारत एवं विश्व का भूगोल**' पढें"।राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3" से 30°12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69'30" से 78'17" पूर्वी देशांतर है। (देखें मानचित्र A, B)

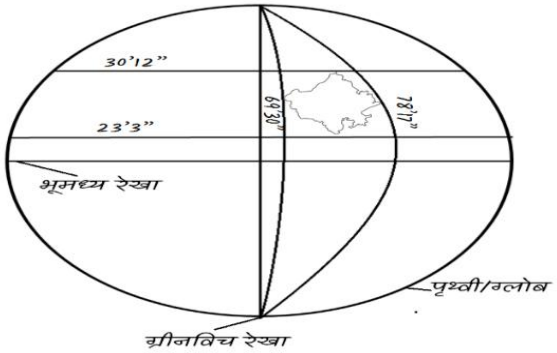

(मानचित्र-A)

नोट- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार **7'9"(30°12" 23°3")** है तथा कुल देशांतरीय विस्तार **8°47" (78°17" 69°30")** है।

1° = 4 मिनट
1" =111.4 किलोमीटर होता है।

राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।

1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग होने हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान बन गया।

2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 68,548,437थी जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है।

- **कर्क रेखा राजस्थान में स्थित:-**

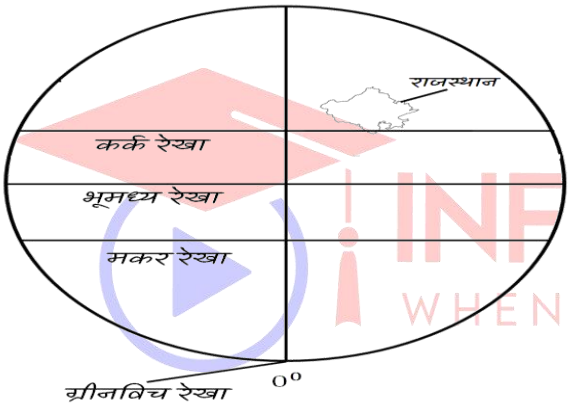

कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-

- **(राजस्थान, मध्यप्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, गुजरात, मिजोरम, त्रिपुरा)**
- राजस्थान में कर्क रेखा बांसवाड़ा जिले के मध्य से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है, इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिले को भी स्पर्श करती है अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है।
- राजस्थान में कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोमीटर है। राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है।
- राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बांसवाड़ा है।
- भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है, अतः वहां पर तापमान अधिक होता है। जैसे-जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है।
- राजस्थान में बांसवाड़ा जिले में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

कारण- बांसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है तथा श्रीनगर सबसे उत्तर में स्थित है।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बांसवाड़ा होना चाहिए एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए लेकिन वर्तमान में राज्य का सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरु है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है इसका कारण यहां पाई जाने वाली रेत व निप्सम है।

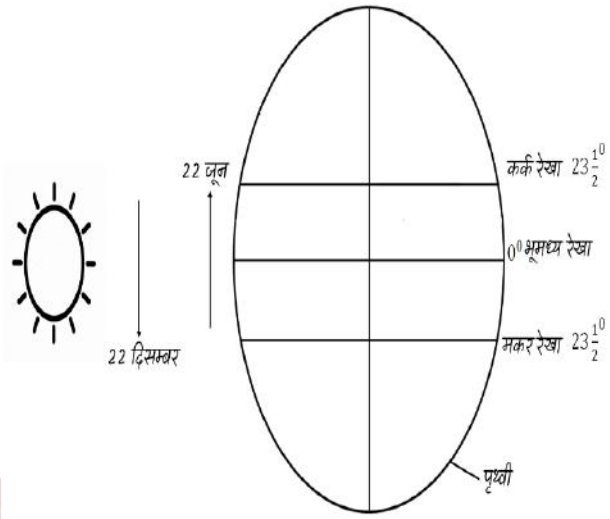

मानचित्र को ध्यान से समझिए

नोट- जैसे कि ऊपर दिए गए मानचित्र में समझाया है कि, सूर्य 21 जून को सीधा कर्क रेखा पर और 22 दिसंबर को सीधा मकर रेखा पर चमकता है। इसके अलावा 21 मार्च और 23 सितंबर को सीधे भूमध्य रेखा पर चमकता है। अर्थात् 21 जून को कर्क रेखा पर सीधे चमकने के बाद जुलाई, अगस्त, सितंबर ..... दिसंबर में जैसे-जैसे समय बढ़ता जाता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश मकर रेखा की ओर बढ़ता जाता है, फिर 22 दिसंबर तक मकर रेखा पर पहुंचने के बाद जनवरी, फरवरी.....जून में जैसे-जैसे समय बढ़ता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश कर्क रेखा की ओर बढ़ता है।

अर्थात सूर्य की सीधी किरणें कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच में पड़ती है इस क्षेत्र को उष्णकटिबंधीय क्षेत्र कहते है। ध्रुवों पर सूर्य की किरणें ना पहुंचने के कारण वहां वर्ष भर बर्फ पाई जाती है।

इस प्रकार राजस्थान का सबसे दक्षिणी जिला बांसवाड़ा में सूर्य की सबसे ज्यादा सीधी किरणें पड़ती है (कर्क रेखा के सबसे नजदीक होने के कारण) इसलिए बांसवाड़ा को राजस्थान का सबसे गर्म जिला होना चाहिए, लेकिन चूरु सबसे गर्म जिला है (कारण-रेत) । इसी प्रकार सबसे उत्तरी जिला श्रीगंगानगर में सूर्य की

सबसे ज्यादा तिरछी किरणें पड़ती है, इसलिए श्रीगंगानगर को राजस्थान का सबसे ठंडा जिला होना चाहिए लेकिन चूरु सबसे ज्यादा ठंडा जिला है (कारण-निप्सम)

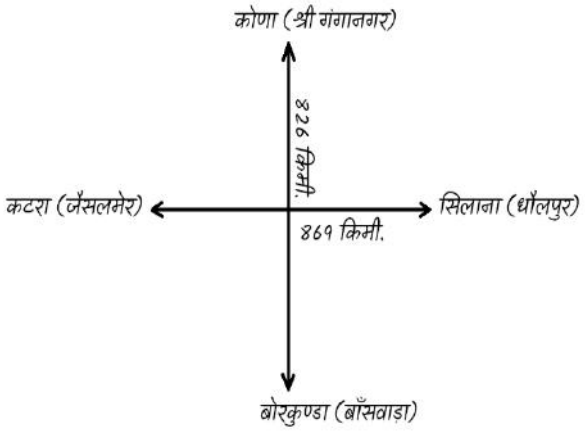

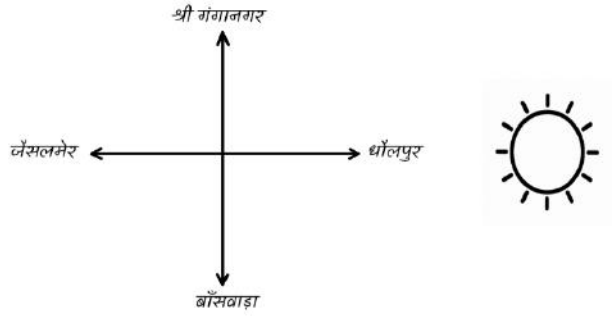

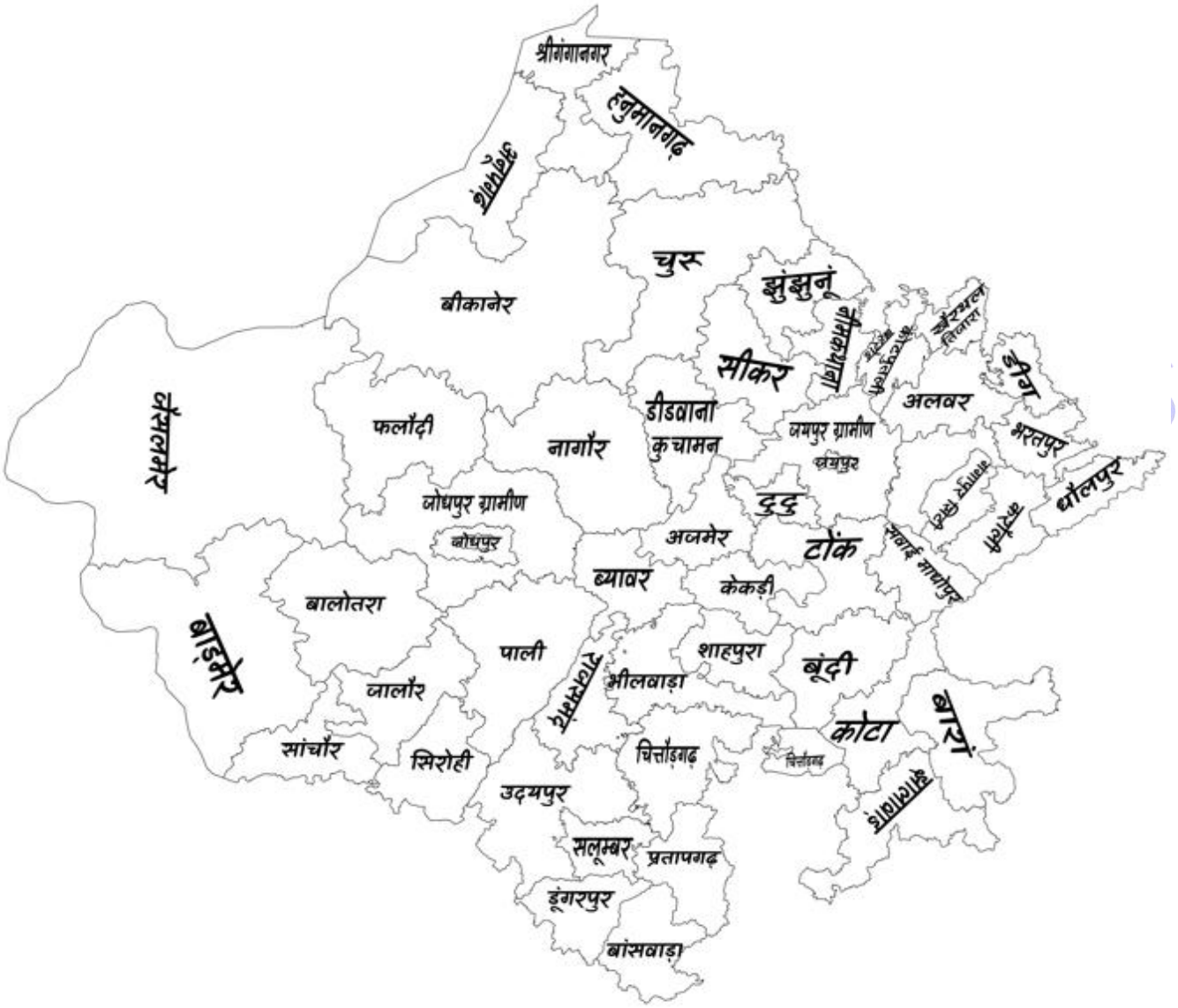

पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

विस्तार:-

राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिले के कोणा गांव से दक्षिण में बांसवाड़ा जिले की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गांव तक है।

इसी प्रकार पूरब से पश्चिम तक की चौड़ाई 869 किलोमीटर है तथा विस्तार पूरब में धौलपुर जिले के नगमोहनपुरा की ढाणी, सिलाना गांव से पश्चिम में जैसलमेर जिले के कटरा गांव (सम-तहसील) तक है।

आकृति

विषम कोणीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है। राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोमीटर (1070 अंतरराष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

रेडक्लिफ रेखा

रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सीरिल एम. रेडक्लिफ को माना जाता है। इसकी स्थापना 14/15 अगस्त 1947 को की गई। इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3310 किलोमीटर है। रेडक्लिफ रेखा पर भारत के ***तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश*** स्थितहैं।

1. पंजाब (547 कि.मी.)
2. राजस्थान (1070 कि.मी.)
3. गुजरात (512 कि.मी.)

केंद्र शासित प्रदेश

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी. लद्दाख व J&K दोनों)
2. लद्दाख

रेडक्लिफ रेखा के साथ सर्वाधिक सीमा- ***राजस्थान*** (1070 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय- ***श्रीनगर***

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दुर राजधानी मुख्यालय- ***जयपुर***

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य- ***राजस्थान***

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य- ***पंजाब***

- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा ***1070 कि.मी.*** है। जो ***राजस्थान के पांच जिलों*** से लगती है।

1. श्रीगंगानगर
2. अनूपगढ़
3. बीकानेर.
4. जैसलमेर- 464 कि.मी.
5. बाड़मेर- 228 कि.मी.

- रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के ***हिन्दूमल कोट*** से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।
- रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपाकर राजस्थान से सीमा बनाती है।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा – ***बहावलपुर***

राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- ***खैरपुर***

पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान की सीमा को छूते हैं।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- राजस्थान की रेडक्लिफ रेखा से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) की लगती है।
- रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय -अनूपगढ़
- रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय - बीकानेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे छोटा जिला – ***श्रीगंगानगर***

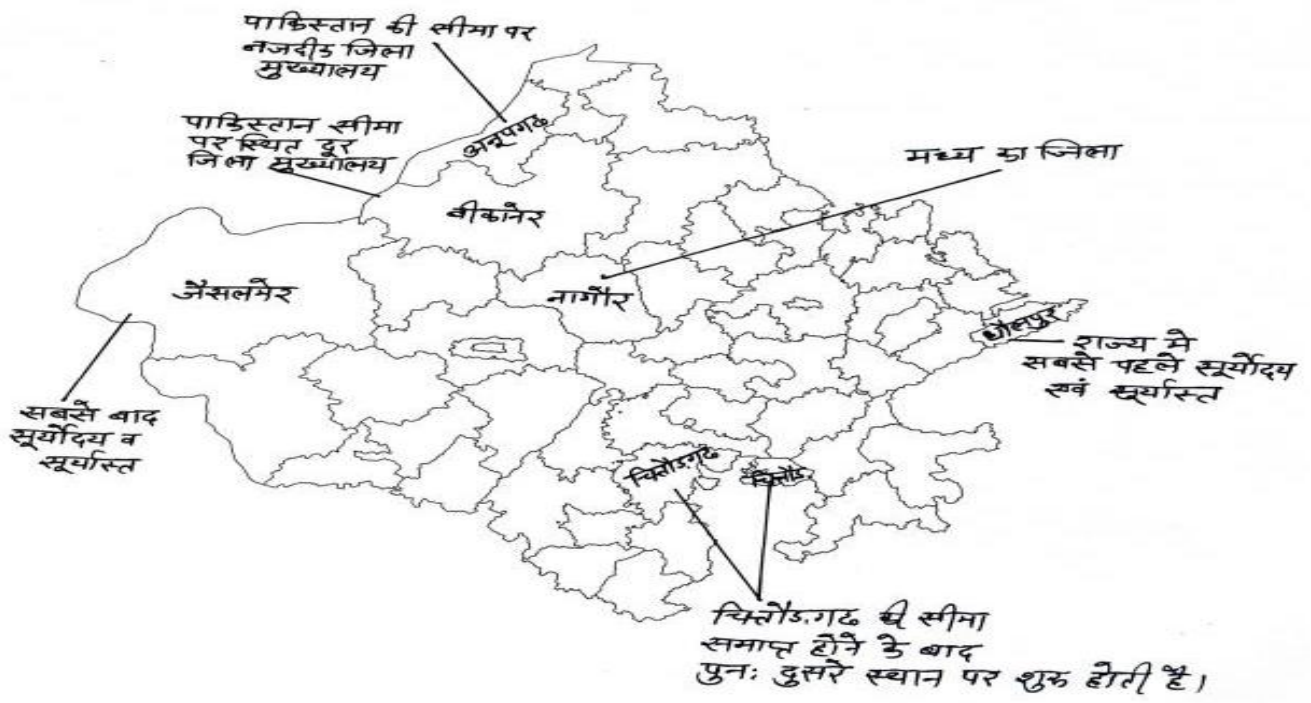

5. जोधपुर
6. पाली
7. बांसवाडा
8. बीकानेर
9. भरतपुर
10. सीकर

1. ***अजमेर संभाग*** – अजमेर संभाग में 7 जिले ब्यावर, शाहपुरा, डीडवाना-कुचामन, अजमेर, केकड़ी, टोंक, नागौर आते हैं।
2. ***उदयपुर संभाग*** – उदयपुर संभाग में 5 जिले आते हैं- उदयपुर, भीलवाडा, चित्तौड़गढ़, सलुम्बर, राजसमन्द। ***ट्रिक – उदय भील*** का ***चित्तौड़*** से ***सलुम्बर*** तक ***राज*** है।
3. ***कोटा संभाग-*** कोटा संभाग में 4 जिले (बारां, बूंदी, कोटा, झालावाड़) आते हैं।
4. ***जयपुर संभाग*** – जयपुर संभाग में 6 जिले (जयपुर, अलवर, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, दौसा, दूदू) आते हैं।
5. ***जोधपुर संभाग-*** जोधपुर संभाग में 6 जिले (जोधपुर / जोधपुर ग्रामीण, बाड़मेर, फलौदी, बालोतरा, जैसलमेर)
6. ***पाली संभाग*** – पाली संभाग में 4 जिले (पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही) शामिल हैं।
7. ***बांसवाड़ा संभाग*** – बांसवाडा संभाग में 3 जिले (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़) शामिल हैं।
8. ***बीकानेर संभाग*** - बीकानेर संभाग में 4 जिले (श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़, बीकानेर) शामिल हैं।
9. ***भरतपुर संभाग*** – भरतपुर संभाग में 6 जिले (भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, गंगापुरसिटी और डीग) शामिल हैं।
10. ***सीकर संभाग*** – सीकर संभाग में 4 जिले (झुंझुनू, सीकर, चुरू और नीमकाथाना) शामिल हैं।

<u>अंतर्राष्ट्रीय सीमा</u>

अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाले संभाग - बीकानेर व जोधपुर

- सर्वाधिक अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग - जोधपुर
- न्यूनतम अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग - बीकानेर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा के नजदीक संभागीय मुख्यालय - बीकानेर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा से दूर संभागीय मुख्यालय -जोधपुर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा संभाग - जोधपुर
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में छोटा संभाग-बीकानेर

राजस्थान के वे जिले जो अंतर्राष्ट्रीय और अंतर्राज्यीय नहीं बनाते हैं।

22 जिले - (जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, बालोतरा, फलौदी, जालौर, पाली, राजसमन्द, शाहपुरा, केकड़ी, ब्यावर, अजमेर, टोंक, दौसा, बूंदी, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दूदू, डीडवाना-कुचामन, सीकर, नागौर, सलुम्बर तथा गंगापुरसिटी)

मेवात क्षेत्र / मत्स्य प्रदेश	खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, अलवर, भरतपुर, डीग
श्रीपंथ	बयाना (भरतपुर)
कोठी	धौलपुर
गोपालपाल	करौली
डांग क्षेत्र, बीहड़	करौली, सवाईमाधोपुर
प्राचीन भारत का टाटा नगर, नवाबों का शहर	टोंक
हयहय प्रदेश, हाडौती प्रदेश	कोटा, बूंदी, झालावाड़, बारां
बृजनगर, खींचीवाड़ा	झालावाड़
मालव प्रदेश	झालावाड़, प्रतापगढ़
वार्गट	डूंगरपुर बाँसवाड़ा का दक्षिणी भाग
मेवल	बाँसवाड़ा व डूंगरपुर के मध्य का भू-भाग
शिवी जनपद	सिरोही
देवनगरी, चन्द्रावती, आर्बुद	सिरोही
श्रीमाल, बाहड़मेट, मालाणी	बाड़मेर
जलालाबाद, जाबालीपुर	जालौर
मांड प्रदेश, वल्ल, दुंगल	जैसलमेर
जांगल प्रदेश	बीकानेर
थली क्षेत्र	चुरू, हनुमानगढ़, बीकानेर, श्री गंगानगर (चारों की सीमा रेखा जहाँ मिलती है, के आस-पास का क्षेत्र)
राम् जाट की ढाणी	गंगानगर
जाट रियासत	भरतपुर, धौलपुर
मत्स्य संघ / शूरसेन	कोटपूतली-बहरोड़, डीग, अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर
अर्जुनायन	डीग, अलवर, भरतपुर
बांगड़ प्रदेश	झुंझुनू, सीकर, नीमकाथाना, डीडवाना-कुचामन, नागौर
सपादलक्ष	बीकानेर
चुन्धेर	अनूपगढ़
जांगल प्रदेश की राजधानी / अहिछत्रपुर	नागौर
मरुत्रिकोण	बीकानेर, फलौदी, जोधपुर ग्रामीण, बालोतरा, जैसलमेर, बाड़मेर
मारवाड़ / मरुधर	जोधपुर
रामदेवरा	रुणिचा
मांडव्यपुर	मंडोर
नेहड़ / सत्यपुर	सांचौर

गोडवाड़	सांचौर, जालौर, बालोतरा, सिरोही
उपरमाल	बिजोलिया (भीलवाड़ा) भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़)
कांठल	प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा
सौ द्वीपों का शहर	बाँसवाड़ा
तोरावाटी	शेखावाटी क्षेत्र में काटली नदी का अपवाह क्षेत्र
भोमट क्षेत्र	डूंगरपुर, पूर्वी सिरोही, उदयपुर जिले का अरावली पर्वतीय आदिवासी क्षेत्र
गुर्जरात्रा	जोधपुर जिले का दक्षिणी भाग (मंडोर)
आडवाल	अरावली
मेरवाड़ा	अजमेर व राजसमंद जिले का दिवेर क्षेत्र
सालव प्रदेश	अलवर का क्षेत्र
उपकेशपट्टन / राजस्थान का भुवनेश्वर	ओसियां (जोधपुर ग्रामीण)
अजयमेरु	अजमेर
कोंकण तीर्थ	पुष्कर
मध्यमिका	नगरी
खिज्राबाद	चित्तौड़गढ़
भटनेर	हनुमानगढ़
जयनगर	जयपुर
उपनाम / प्राचीन नाम	**स्थानी / क्षेत्र**
राजस्थान का वेल्लोर	भैंसरोड़गढ़ दुर्ग (चि.)
तीर्थों का भांजा	मचकुंड (धौलपुर)
तीर्थों का मामा / कोंकण तीर्थ	पुष्कर
थार का घड़ा	चाँदन नलकूप
महान भारतीय जल विभाजक रेखा	अरावली पर्वतमाला
राजस्थान की कामधेनु	चंबल नदी
वागड़ की गंगा	माही नदी
कांठल की गंगा	माही नदी
अर्जुन की गंगा	बाणगंगा नदी
आदिवासियों की गंगा	माही नदी
आदिवासियों का कुंभ	बेणेश्वर
खनिजों का अजायबघर	राजस्थान
राजस्थान का विंडसर महल	**राजमहल (फर्ग्युसन्)**
प्रहरी मीनार	एक थंबा महल (जोधपुर)
राजस्थान राज्य की आत्मा	घूमर नृत्य
राजस्थान का खेल नृत्य	नेजा नृत्य

- ***राज्य की सबसे बड़ी नदी चंबल है।***
- *पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं।*
- *मारवाड़ की जीवन रेखा लूनी नदी को कहते हैं।*
- *बीकानेर की जीवन रेखा कंवर सेन लिफ्ट परियोजना को कहते हैं।*
- *राजसमंद की जीवन रेखा नंद समंद झील कहलाती है।*
- *भरतपुर की जीवन रेखा मोती झील है।*
- *गुजरात की जीवन रेखा नर्मदा परियोजना है।*
- *जमशेदपुर की जीवन रेखा स्वर्ण रेखा नदी को कहा जाता है। इस नदी पर हुंडरू जल प्रपात स्थित है।*
- *आदिवासियों की या दक्षिणी राजस्थान की जीवन रेखा माही नदी को कहा जाता है।*
- *पूरे राज्य में बहने वाली सबसे बड़ी नदी बनास है।*
- *भारत सरकार द्वारा राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड की स्थापना 1955 में की गई थी। इस बोर्ड का नियंत्रण राजस्थान सरकार को सौंपा गया था। 1971 से इस बोर्ड को भूजल विभाग के नाम से जाना जाता है इसका कार्यालय जोधपुर में है।*
- *पूर्णत : राजस्थान में बहने वाली सबसे लंबी नदी तथा सर्वाधिक जल ग्रहण क्षेत्र वाली नदी बनास है।*
- *चंबल नदी पर भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) के निकट चूलिया जल प्रपात तथा मांगली नदी पर बूंदी में "भीमलत प्रपात" है।*

- ***अंतर्राज्य सीमा बनाने वाली एक मात्र नदी है चंबल,*** *जो कि राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा बनाती है।*
- *टोंक जिले की राजमहल नामक जगह पर बनास नदी, डाई नदी तथा खारी नदी के द्वारा त्रिवेणी संगम बनाया जाता है। यहाँ शिव एवं सूर्य की संयुक्त प्रतिमा स्थित है, जो मार्तंड भैरव मंदिर या देवनारायण मंदिर के नाम से जाना जाता है यहाँ नारायण सागर बाँध स्थित है।*

प्रिय छात्रों अब हम प्रत्येक अपवाह तंत्र को विस्तृत रूप से समझते हैं। सबसे पहले हम बंगाल की खाड़ी की ओर चले जाने वाली नदियों का अध्ययन करेंगे-

1. ***<u>चंबल नदी</u>*** *–प्रिय छात्रों चंबल नदी के बारे में हम समझते हैं कि क्या है इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषताएं*

- *चंबल नदी राजस्थान की एक मात्र ऐसी नदी है जो प्राकृतिक अंतर्राज्य सीमा (राजस्थान, मध्यप्रदेश) निर्धारित करती है। इस नदी को अन्य नामों से भी जाना जाता है इसके अन्य नाम है चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारह मासी नदी, नित्य वाहिनी नदी।*
- *इस नदी की* ***कुल लंबाई लगभग 1051 किलो मीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात् 3 राज्यों में बहती है*** *यह नदी मध्यप्रदेश में लगभग 320 किलो मीटर, राजस्थान में लगभग 322 किलो मीटर, उत्तरप्रदेश में लगभग 157 किलो मीटर बहती है तथा मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश के मध्य 252 किमी लम्बी अंतरराज्यीय सीमा बनाती है।*

INFUSION NOTES

चम्बल एवं इसकी सहायक नदियाँ

- इस नदी का **उद्गम स्थल मध्यप्रदेश के महु के निकट विंध्याचल पर्वतमाला** में स्थित 616 मीटर ऊंची "जानापाव की पहाड़ी" से होता है।
- मध्यप्रदेश में मंदसौर जिला में स्थित रामपुरा भानपुरा के पठारों में स्थित इस नदी का सबसे बड़ा बाँध **"गांधी सागर बाँध"** बना हुआ है।
- यह नदी राजस्थान में सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है।
- इस नदी पर भैंसरोड़गढ़ के समीप सबसे बड़ा सबसे ऊंचा जल प्रपात बना है जिसे चूलिया जल प्रपात के नाम से जानते हैं।
- चंबल नदी पर चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा नामक स्थान राणाप्रताप सागर बाँध बना हुआ है जो कि जल भराव की क्षमता से राज्य का सबसे बड़ा बाँध है। इस बाँध का 113 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।
- चंबल नदी चित्तौड़गढ़ जिले में बहने के बाद कोटा जिले में प्रवेश करती है।
- **कोटा जिले में इस नदी पर जवाहर सागर व कोटा बैराज बाँध** बना हुआ है कोटा बैराज बाँध जल विद्युत उत्पादन के लिए उपयोग में नहीं लिया जाता।
- कोटा जिले के नौनेरा नामक स्थान पर "कालीसिंध नदी" चंबल में आकर मिल जाती है
- यह स्थान प्राचीन काल में कपिल मुनि की तपस्या स्थली रहा था।
- कोटा तथा बूंदी जिले की सीमा निर्धारित करती हुई यह नदी बूंदी जिले में प्रवेश करती है।
- बूंदी जिले की केशवरायपाटन नामक स्थान पर इस नदी का सर्वाधिक गहरा पाट है जो 113 मीटर की गहराई तक है।
- बूंदी जिले से आगे चल कर यह नदी कोटा तथा सवाई माधोपुर की सीमा निर्धारित करती है।
- सवाईमाधोपुर जिले के खण्डार तहसील के रामेश्वर नामक स्थान पर बनास तथा सीप नदी चंबल में आकर मिलती है तथा यहाँ त्रिवेणी संगम बनाते हैं।
- सवाई माधोपुर जिले के पालीया नामक स्थान पर चंबल नदी की सहायक नदी पार्वती इसमें आकर मिलती है।
- धौलपुर जिले के पीलहाट होते हुए यह नदी राजस्थान से बाहर निकलती है और उत्तरप्रदेश राज्य में प्रवेश कर जाती है।
- अंत में यह नदी उत्तरप्रदेश राज्य के इटावा जिले के मुराद्गंज कस्बे में 275 किलो मीटर बहने के बाद यमुना में मिल जाती है यह यमुना की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

चंबल नदी से संबंधित अन्य तथ्य -

- चंबल नदी राज्य के कुल अपवाह क्षेत्र का 20.90% भाग में है। यह नदी **"गांगेय सूस"** नामक स्तन पायी जीव के लिए प्रसिद्ध है।
- **चंबल यूनेस्को की विश्व धरोहर के लिए नामित राज्य की एकमात्र नदी है व बहाव की क्षमता की दृष्टि से राज्य की सबसे लंबी नदी** चंबल ही है।
- यह सर्वाधिक सतही जल वाली नदी है इसीलिए इसे **"वाटर सफारी नदी"** भी कहा जाता है।
- चंबल नदी से सर्वाधिक अवनालिका अपरदन कोटा जिले में होता है।
- **चंबल नदी राज्य के चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, करौली और धौलपुर जिले में बहती है।**
- यह विश्व की एकमात्र ऐसी नदी है जिस पर प्रत्येक 100 किलो मीटर की दूरी पर 3 बड़े बाँध बने हुए हैं और तीनों ही बाँध से जल विद्युत उत्पादन होता है।
- चंबल नदी में घड़ियाल सर्वाधिक मात्रा में पाए जाते हैं इस कारण चंबल नदी को **घड़ियालों कि जन्मस्थली** कहा जाता है।

चंबल की सहायक नदियाँ -

- **मध्यप्रदेश में मिलने वाली नदियाँ - सीवान, रेतम, शिप्रा।**
- **राजस्थान में मिलने वाली नदियाँ - आलनिया, परवन, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बामनी, कुराल, छोटी कालीसिंध आदि।**

शोर्ट ट्रिक

चम्बल नदी की सहायक नदियों के नाम:-

"बना काली बाम मे कल पर्व चम्बल पर"

सूत्र		**नदियाँ**
बना	-	बनास
काली	-	कालीसिंध
बाम	-	बामनी
मे	-	मेज
कल	-	कुराल
पर्व	-	पार्वती

चंबल नदी पर चार बाँध बनाए गए हैं -

गाँधी सागर बाँध	-	मध्यप्रदेश की भानपुरा तहसील में
राणाप्रताप सागर बाँध	-	रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)
जवाहर सागर बाँध	-	बोरा बास, कोटा
कोटा बैराज बाँध	-	कोटा

2. बनास नदी -

बनास नदी एवं उसकी सहायक नदियाँ

- ***बनास नदी का उद्गम राजसमंद जिले में स्थित खमनौर की पहाड़ियाँ से होता है*** *पूर्णतः प्रवाह के आधार पर यह राजस्थान की सबसे लंबी नदी है इसकी कुल लंबाई लगभग 512 किलो मीटर है।*
- *इस नदी को वन की आशा, वर्णाशा, वनआशा, वशिष्ठ आदि नामों से जाना जाता है ।*
- *यह नदी 8 जिलों में बहती है यह 8 जिले क्रम से हैं राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर, केकड़ी, शाहपुरा ।*
- *इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में भूरी मिट्टी के प्रसार पाया जाता है।*
- ***भीलवाड़ा जिले के बीगोद नामक कस्बे के समीप बनास, बेड़च और मेनाल का त्रिवेणी संगम स्थित है।***
- *टोंक जिले में देवली नामक स्थान पर बनास नदी में खारी नदी मिलती है। बनास नदी टोंक जिले में सर्पाकार आकार की हो जाती है।*
- *टोंक जिले के राजमहल नामक स्थान पर बनास, डाई, खारी नदी का त्रिवेणी संगम स्थित है।*
- *रामेश्वरम (सवाईमाधोपुर) में चम्बल, बनास व सीप नदी मिलती है। भीलवाड़ा व चित्तौड़गढ़ की सीमा पर मेनाल झरना स्थित है।*
- ***नोट -*** *राज्य की सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना इंदिरा गांधी नहर परियोजना है, जब कि राज्य की सबसे बड़ी पेयजल परियोजना* ***टोंक जिले में बनास नदी पर निर्मित बीसलपुर बाँध परियोजना है।*** *इसी बीसलपुर बाँध परियोजना से जयपुर शहर को लगातार जलापूर्ति की जा रही है। बीसलपुर बाँध का निर्माण अजमेर के चौहान शासक विग्रह राज चतुर्थ (बीसलदेव) ने करवाया था।*
- ***बनास नदी पर झाड़ोल सिंचाई परियोजना स्थित है।***
- *बनास नदी अपने प्रवाह के अंत में सवाई माधोपुर जिले के खंडार तहसील के रामेश्वर नामक स्थान पर जाकर चंबल में मिल जाती है अर्थात् बनास चंबल की सहायक नदी है जैसा कि हमनें पहले ही पढ़ा था।*
- *बनास नदी चंबल की सबसे बड़ी सहायक नदी है इस नदी पर नाथद्वारा के पास नंदसमंद बाँध का निर्माण कराया गया है जिसको राजसमंद की लाइफ लाइन भी कहा जाता है ।*
- ***इसकी सहायक नदियाँ बेड़च, कोठारी, खारी, मानसी, मोरेल, गंभीरी, मेनाल, सहोदरा आदि हैं।***

बनास नदी की मुख्य सहायक नदियों के नाम है ।

"बेड़च सोम खारी का मोर मांग''

सूत्र	**-**	**नदियाँ**
बेड़च	-	बेड़च
म	-	मेनाल
सो	-	सहोदरा
खारी	-	खारी
का	-	कोठारी
मोर	-	मोरेल
मा	-	मानसी
ग	-	गम्भीरी

- यहाँ से कर्ण फूल, गले का हार, चूड़ियां, पायजेब आदि आभूषणों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं ।
- यहाँ से आलीशान इमारतों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं ।
- रैढ़ से मृति का से बनी यक्षिणी की प्रतिमा प्राप्त हुई है जो संभवतः शुंगकाल की मानी जाती है ।
- यहाँ से मालव जनपद के 14 सिक्के, 6 सेनापति सिक्के एवं 7 वपूके सिक्के प्राप्त हुए हैं ।
- रैढ़ से एशिया का अब तक का सबसे बड़ा सिक्का का भण्डार मिला है ।
- रैढ़ से जस्ते को साफ करने के प्रमाण मिले है ।
- रैढ़ के निवासी मोटा एवं बारीक कपड़ा बनाने में सिद्ध हस्त थे ।

नगर (टोंक)

- नगर उणियारा कस्बे के पास स्थित है। इसे कर्कोट नगर भी कहा जाता है ।
- इसका प्राचीन नाम 'मालवनगर' था।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य 1942-43 में श्री कृष्ण देव द्वारा किया गया ।
- यहाँ से बड़ी संख्या में मालव सिक्के तथा आहत मुद्राएं प्राप्त हुई है ।
- नगर में उत्खनन से गुप्तोत्तर काल की स्लेटी पत्थर से निर्मित महिषासुर मर्द्दिनी की मूर्ति प्राप्त हुई है ।
- इसके अतिरिक्त यहाँ से मोदक रूप में गणेश का अंकन, फणधारी नाग का अंकन, कमल धारण की एक लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा प्राप्त हुई है ।
- वर्तमान में नगर सभ्यता को 'खेड़ा सभ्यता' के नाम से जाना जाता है ।
- नगर के उत्खनन से 6000 मालव सिक्के मिले हैं।

अध्याय – 2

राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश

- **प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनितिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां**
- **गुर्जर प्रतिहार वंश**

- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से 11वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया ।
- जोधपुर के बौक शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार गुर्जर प्रतिहार कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी भीनमाल (जालौर) थी । बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के सर्वप्रथम उल्लेख से मिलती है ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डौर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में कु-ची-लो (गुर्जर) देश का उल्लेख करता है ।
- अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को 'जुर्ज' भी कहा है ।
- अल मसूदी प्रतिहारों को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को 'बोरा' कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्रजी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए ।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है । डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं । जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को ईरानी मूल के बताते हैं ।
- मिस्टर जैक्सन ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था । कनिघंम ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है ।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था ।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई। मुहणौत नैणसी (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल

26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डौर व भीनमाल ।

- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।

भीनमाल शाखा (जालौर)

संस्थापक - नागभट्ट प्रथम ।

- रघुवंशी प्रतिहारों ने चावडों से प्राचीन गुर्जर देश छीन लिया और अपनी राजधानी भीनमाल को बनाया । भीनमाल शाखा के प्रतिहारों की उत्पति के विषय में जानकारी ग्वालियर प्रशस्ति से मिलती है। जो प्रतिहार शासक भोज प्रथम के समय उत्कीर्ण हुई ।
- प्रसिद्ध कवि राजशेखर के ग्रंथों से भी भीनमाल के प्रतिहारों की जानकारी मिलती है ।

अवन्ति / उज्जैन शाखा

- नागभट्ट प्रथम के समय दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित ।

कन्नौज शाखा

- नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।
- आभानेरी तथा राजौरगढ़ के कलात्मक वैभव गुर्जर प्रतिहार काल के है ।

मण्डौर शाखा (जोधपुर)

संस्थापक - रज्जिल

- गुर्जर प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी मण्डौर थी ।
- गुर्जर प्रतिहारों की इन शाखाओं में सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण मण्डौर के प्रतिहार थे । मंडोर के प्रतिहार क्षत्रीय माने जाते है ।

हरिशचंद्र :-

- हरिशचंद्र को प्रतिहार वंश का संस्थापक प्रतिहारों का गुरु/गुर्जर प्रतिहारों का आदि पुरुष/ गुर्जर प्रतिहारों का मूल पुरुष कहते हैं ।
- हरिशचंद्र की दो पत्नियों में से एक ब्राह्मण तथा दूसरी क्षत्रिय पत्नी थी । क्षत्रिय पत्नी का नाम भद्रा था ।
- इसकी क्षत्रिय पत्नी के चार पुत्र हुए जिनके नाम भोगभट्ट, कद्दक, रज्जिल और दह (दद्द) थे ।

रज्जिल: :-

- गुर्जर प्रतिहार राजवंश के आदिपुरुष हरिशचंद्र थे, तो मण्डौर के गुर्जर प्रतिहार राजवंश के संस्थापक रज्जिल थे।
- रज्जिल ने मण्डौर को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।

नरभट्ट :-

- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नरभट्ट का उल्लेख पिल्लापल्ली नाम से किया है, जिसका शाब्दिक अर्थ साहसिक कार्य करने वाला होता है ।

नागभट्ट प्रथम (730 ई.-760 ई.)

- नागभट्ट प्रथम को 'नागवलोक' तथा इसके दरबार को नागवलोक दरबार कहा जाता था।
- नागभट्ट प्रथम को प्रतिहार साम्राज्य का संस्थापक कहा जाता है ।
- नाग भट्ट प्रथम नरभट्ट का पुत्र था ।
- नागभट्ट प्रथम ने भीनमाल को चावडों से जीता तथा 730 ई. में भीनमाल को राजधानी बनाया । इसने भीनमाल में प्रतिहार वंश की स्थापना की ।
- ग्वालियर अभिलेख के अनुसार नागभट्ट प्रथम ने म्लेच्छ (अरबी) सेना को पराजित कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया ।
- नागभट्ट प्रथम का समकालीन अरब शासक जुनैद था । इसकी पुष्टि अल बिलादुरी के विवरण से होती है ।
- हांसोट अभिलेखानुसार समकालीन अरब शासक जुनैद के नियंत्रण से भडौंच छीनकर नागभट्ट प्रथम ने चाहमान भतृवडढ द्वितीय को शासक नियुक्त किया ।

वत्सराज (783 ई. - 795 ई.)

- वत्सराज देवराज व भूयिका देवी का पुत्र था ।
- वत्सराज ने कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत की, जो 150 वर्ष तक चला ।
- 150 वर्ष का त्रिपक्षीय संघर्ष कन्नौज को लेकर हुआ ।
- उत्तर भारत के गुर्जर प्रतिहार, दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट वंश, पूर्व में बंगाल के पालवंश के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ । इस संघर्ष में गुर्जर प्रतिहार विजयी हुए ।
- कन्नौज को कुश स्थल व महोदय नगर के नाम से जाना जाता था । कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत गुर्जर-प्रतिहार शासक वत्सराज के समय हुई ।

त्रिपक्षीय संघर्ष के परिणाम

- (त्रिपक्षीय संघर्ष) का प्रथम चरण गुर्जर-प्रतिहार वत्सराज, बंगाल के पाल शासक धर्मपाल व दक्षिण के राष्ट्रकूट शासक ध्रुव के बीच हुआ ।
- वत्सराज ने कन्नौज पर शासित इन्द्रायुध को हराया व उसने पाल शासक धर्मपाल को मुंगेर (मुदगगिरी) के युध्द में पराजित किया । किन्तु राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से पराजित हुआ ।
- वत्सराज को रणहस्तिन (युद्ध का हाथी) की उपाधि प्राप्त थी । वत्सराज के समय 778 ई. में उद्योतन सूरी द्वारा 'कुवलयमाला ग्रंथ' की तथा जिन सेन सूरी द्वारा 783 ई. में 'हरिवंश पुराण' की रचना की गई ।
- वत्सराज शैव मत का अनुयायी था ।
- वत्सराज ने ओसियाँ (जोधपुर) में एक सरोवर तथा महावीर स्वामी का एक मंदिर बनवाया जो कि पश्चिम भारत का प्राचीनतम जैन मंदिर माना जाता है ।
- राजस्थान में प्रतिहारों का प्रमुख केन्द्र ओसियाँ (जोधपुर) था । वत्सराज के शासनकाल में वलिप्रबंध नामक काव्य

ग्रंथ लिखा गया । जिसमें सती प्रथा, नियोग प्रथा एवं स्वयंवर प्रथा की जानकारी मिलती है ।

नागभट्ट द्वितीय (795-833 ई.)

- यह वत्सराज का पुत्र था ।
- उपाधि –परमभट्टाचार्य ,परमेश्वर , महाराजा धिराज
- गोविन्द – III, जो राष्ट्रकूट शासक था , ने नागभट्ट – II को हराया ।
- नागभट्ट – II ने जोधपुर के बुचकेला में विष्णु तथा शिव का मंदिर बनवाया जो वर्तमान में शिव –पार्वती मंदिर के नाम से विख्यात है ।
- नागभट्ट =- II ने कन्नौज के राजा चन्द्रायुद्ध को हराकर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया ।
- नागभट्ट -II नें बंगाल के शासक धर्मपाल को हराकर मुंगेर पर अधिकार कर लिया ।
- अरब आक्रमणकारियों पर पूर्णतः रोक लगाने वाला प्रतिहार राजा नागभट्ट द्वितीय था ।
- नागभट्ट द्वितीय की दानशीलता एवं कन्यादान करने के कारण इन्हें 'कर्ण' की उपाधि दी गई। जिसका उल्लेख ग्वालियर अभिलेख में मिलता है ।
- 833 ई. में नागभट्ट द्वितीय ने गंगा में जल समाधी ली।

रामभद्र (833-836 ई.)

नागभट्ट द्वितीय के बाद कुछ समय (833 से 836 ई.) के लिए उसका पुत्र रामभद्र गद्दी पर बैठा। रामभद्र को पाल वंश के शासक से हार का मुँह देखना पड़ा। ग्वालियर शिलालेख के अनुसार रामभद्र सूर्य का भक्त था । अतः उसने अपने का नाम पुत्र का नाम मिहिर (सूर्य) भोज देव रखा था ।

मिहिर भोज (836-885 ई.)

- मिहिर भोज का शाब्दिक अर्थ 'सूर्य का प्रतीक' है ।
- इन्होंने अपने पिता रामभद्र की हत्या कर प्रतिहारों के शासक बना, इस कारण मिहिर भोज को प्रतिहारों में पितृहंता कहा जाता है ।
- मिहिर भोज गुर्जर प्रतिहारवंश में सबसे शक्तिशाली राजा था । मिहिर भोज का काल गुर्जर प्रतिहारवंश का चरमोत्कर्ष काल था । आदि वराह की उपाधि मिहिर भोज शासक ने धारण की है । ग्वालियर प्रशस्ति भोज के काल में लिखी गई।
- मिहिर भोज ने द्रुम नामक सिक्का भी चलाया था ।
- कश्मीरी कवि कल्हण की राजतंरगिणी से मिहिर भोज की उपलब्धियों की जानकारी प्रात होती है ।
- 851 ई. में अरब यात्री 'सुलेमान' ने मिहिर भोज के समय भारत की यात्रा की, जिसका विवरण सुलेमान की पुस्तक किताब-उल-सिंध-वल-हिन्द में है ।
- मिहिर भोज वैष्णव धर्म का अनुयायी था। मिहिर भोज ने विष्णु की सगुण व निर्गुण दोनों रूपो में पूजा की तथा विष्णु को ऋषिकेश कहा है ।
- उत्तरप्रदेश के बेग्रमा लेख में इसे 'संपूर्ण पृथ्वी को जीतने वाला' बताया गया ।

महेन्द्रपाल प्रथम (885-910 ई.)

- महेन्द्रपाल का गुरू व दरबारी कवि राजशेखर था ।
- उपाधि –परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर महेन्द्रायुद्ध
- महेन्द्रपाल प्रथम को 'रघुकुल तिलक चूड़ामणि, निर्भयराज व निर्भय नरेन्द, महीशपाल तथा महेन्द्रायुध' आदि नामों से भी पुकारा गया ।
- महेन्द्रपाल को 'निर्भय नरेश' कहा गया है ।
- इतिहासकार वी. एन. पाठक ने अपने ग्रंथ ' उत्तर भारत का राजनेतिक इतिहास' में प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल प्रथम को हिंदु भारत का अतिंम महान हिंदू सम्राट माना है।

महिपाल प्रथम (914-943 ई.)

- महिपाल ने भी राजशेखर को आश्रय दिया था । राजशेखर ने महिपाल प्रथम को 'आर्यवृत्त का महाराजाधिराज, रघुकुल मुक्तामणि व रघुकुल मुकुटमणि' के नाम से पुकारा ।
- महिपाल को विनायकपाल एवं हेरम्बपाल के नाम से भी जाना जाता है ।
- महिपाल के समय 915 ई. में अरब यात्री अलमसूदी भारत आया ।
- महिपाल प्रथम के शासनकाल से प्रतिहारों का पतन शुरू हो गया

महेन्द्रपाल-द्वितीय (945-948 ई.)

- इसके बाद गुर्जर-प्रतिहारों में चार शासक हुए देवपाल (948-49 ई.), विनायकपाल द्वितीय (953-54 ई.), महीपाल द्वितीय (955 ई.), विजयपाल द्वितीय (960 ई.) इनके समय गुर्जर-प्रतिहारों की अवनति हुई।

राज्यपाल :-

- प्रतिहार शासक राज्यपाल (राजपाल) के समय महमूद गजनवी ने कन्नौज पर 1018 ई. (12वां अभियान) में आक्रमण किया, जिससे डरकर राज्यपाल कन्नौज छोड़कर गंगा पार भाग गया ।

त्रिलोचनपाल :-

- राज्यपाल के बाद त्रिलोचनपाल प्रतिहारों का शासक बना।
- महमूद गजनवी ने 1019 ई. में पराजित किया ।

यशपाल :-

- प्रतिहारवंश का अंतिम शासक यशपाल (1036 ई.) था।
- 11वीं शताब्दी में कन्नौज पर गहड़वाल वंश ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया । इस प्रकार प्रतिहारों के साम्राज्य का 1093 ई. में पतन हो गया ।

अधीनस्थ पार्थक्य संधि (1818) की शर्तें

1. अंग्रेजी कम्पनी एवं संधिकर्त्ता राज्य के साथ सदैव मित्रता के समन्ध बने रहेंगे। एक के मित्र तथा शत्रु दोनों के मित्र और शत्रु समझे जाएँगे।
2. संधिकर्त्ता राज्य की रक्षा करने का दायित्व कम्पनी का होगा।
3. संधिकर्त्ता राज्य कम्पनी का आधिपत्य स्वीकार करेगा और कम्पनी सरकार के अधीन रहते हुए सदैव सहयोग प्रदान करेंगे।
4. ये राज्य अन्य किसी राज्य के साथ राजनीतिक सम्बन्ध नहीं रखेंगे और न ही किसी के साथ संधि व युद्ध करेंगे। यदि किसी पड़ौसी राज्य के साथ झगड़ा हो जाएगा, तो वे उसमें कम्पनी की मध्यस्थता स्वीकार करेंगे।
5. संधिकर्ता राज्यों के शासक व उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के स्वतंत्र शासक होंगे।
6. कम्पनी इन राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
7. जो राज्य पहले मराठों को खिराज देते थे, वे ही अब कम्पनी को खिराज देंगे।

कोटा राज्य के साथ संधि

- 26 दिसम्बर, 1817 को कोटा के मुख्य प्रशासक झाला जालिमसिंह एवं गवर्नर जनरल के विशेष प्रतिनिधि चार्ल्स मेटकॉफ के मध्य 1818 की संधि की गई। इस संधि में 11 धाराएँ थीं।
- 11वीं धारा में संधि पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों के नाम हैं।

संधि की शर्तें

1. कम्पनी सरकार व कोटा राज्य के मध्य पारस्परिक मित्रता एवं सद्भावना सदैव बनी रहेगी।
2. एक पक्ष का मित्र एवं शत्रु दूसरे पक्ष का भी मित्र एवं शत्रु होगा।
3. कम्पनी सरकार कोटा राज्य को सैनिक प्रदान करेगी एवं आवश्यकता पड़ने पर कोटा राज्य द्वारा कम्पनी सरकार को सैनिक सहायता प्रदान करेगा।
4. कोटा राज्य कम्पनी सरकार की अनुमति के बिना किसी अन्य शक्ति से युद्ध एवं मैत्री संधि नहीं करेगा।
5. कोटा महाराव एवं उसके उत्तराधिकारी किसी अन्य शक्ति से विवाद होने पर अंग्रेजों को मध्यस्थ बनाएंगे।
6. कोटा राज्य मराठों को जो खिराज देता था, वह अब कम्पनी सरकार को देगा।
7. कोटा के महाराव एवं उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के शासक बने रहेंगे। कम्पनी उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
8. कोटा महाराव और उसके उत्तराधिकारी सदैव अंग्रेज सरकार की अधीनता में रहते हुए उसे सहयोग देते रहेंगे।

20 फरवरी, 1818 को झाला जालिमसिंह द्वारा अंग्रेजों से पूरक संधि कर दो नयी शर्तें जोड़ी गई।

<u>राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह</u>

- कर्नल जेम्स टॉड पहला व्यक्ति था जिसने राजस्थान का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित इतिहास लिखा इसीलिए कर्नल जेम्स टॉड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा जाता है।
- इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की गलतियों को दूर किया इसीलिए गौरीशंकर हीराचंद ओझा को राजस्थान के इतिहास का वैज्ञानिक पिता कहा जाता है।
- घोड़े वाले बाबा उपनाम से इतिहास में प्रसिद्ध कर्नल जेम्स टॉड के गुरु ज्ञानचंद थे। कर्नल जेम्स टॉड ने पृथ्वीराज रासो के लगभग 30000 हजार दोहो, का अंग्रेजी में अनुवाद किया था।
- ब्रिटिश सरकार ने कर्नल जेम्स टॉड को 1818 से 1822 के मध्य पश्चिमी राजपूत राज्यों का पॉलिटिकल एजेंट नियुक्त किया जिसमें 6 रियासतें शामिल थी
- 1-कोटा 2- बूँदी 3-जोधपुर 4-उदयपुर 5-सिरोही 6-जैसलमेर
- 1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत (Different views in reference to the revolt of 1857)
  - डॉ. रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था।
  - डॉ. रामविलास शर्मा- यह जनक्रांति थी।
  - डिजरायली बेंजामिन डिजरैली – यह राष्ट्रीय विद्रोह था।
  - वी. डी. सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस)।
  - एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था।
  - सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रैविलियन, सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंदोपाध्याय सैयद अहमद खाँ भी सहमत हैं।)
  - जवाहरलाल नेहरु - यह विद्रोह मुख्यतः सामन्तशाही विद्रोह था।
  - सर जेम्स आउट्रम और डब्लयू टेलर ने इसको - यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था कहा है।
  - क्रांति के प्रमुख कारण (Reason of 1857 Revolution)
  - देशी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
  - लॉर्ड डलहौजी की राज्य विलय की नीतियाँ।
  - चर्बी लगे कारतुस का प्रयोग (एनफील्ड)।
  - 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किन्तु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी।

अध्याय – 7

लोक देवता एंव लोक देवियाँ

राजस्थान के लोक देवता

(1) गोगाजी चौहान

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता गोगाजी राठौर का वर्णन- पंच पीरों में सर्वाधिक प्रमुख स्थान।
जन्म - संवत् 1003 में, जन्म स्थान - ददरेवा (चूरू)।
ये चौहान वंश के थे
पिता - जेवरजी चौहान, माता - बाछल दे,
पत्नी - कोलुमण्ड (फलौदी) की राजकुमारी केलमदे (मेनलदे)।

- केलमदे की मृत्यु साँप के कांटने से हुई जिससे क्रोधित होकर गोगाजी ने अग्नि अनुष्ठान किया। जिसमें कई साँप जलकर भस्म हो गये फिर साँपों के मुखिया ने आकर उनके अनुष्ठान को रोककर केलमदे को जीवित करते हैं। तभी से गोगाजी नागों के देवता के रूप में पूजे जाते हैं।
- गोगाजी का अपने मौसेरे भाईयों अर्जन व सुर्जन के साथ जमीन जायदाद को लेकर झगड़ा था। अर्जन - सुर्जन ने मुस्लिम आक्रान्ताओं (महमूद गजनवी) की मदद से गोगाजी पर आक्रमण कर दिया। गोगाजी वीरतापूर्वक लड़कर शहीद हुए।
- युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा (चूरू) में गिरा इसलिए इसे शीर्ष मेडी (शीषमेडी) तथा धड़ नोहर (हनुमानगढ़) में गिरा इसलिए इसे धड़मेड़ी / धुरमेड़ी / गोगामेड़ी भी कहते हैं।
- बिना सिर के ही गोगाजी को युद्ध करते हुए देखकर महमूद गजनवी ने गोगाजी को जाहिर पीर (प्रत्यक्ष पीर) कहा।
- उत्तर प्रदेश में गोगाजी को जहर उतारने के कारण जहर पीर/जाहर पीर भी कहते हैं।
- गोगामेड़ी का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने करवाया। गोगामेड़ी के मुख्य द्वार पर बिस्मिल्लाह लिखा है तथा इसकी आकृति मकबरेनुमा है। गोगामेड़ी का वर्तमान स्वरूप बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की देन है। प्रतिवर्ष गोगानवमी (भाद्रपद कृष्णा नवमी) को गोगाजी की याद में गोगामेड़ी, हनुमानगढ़ में भव्य मेला भरता है।
- गोगाजी की आराधना में श्रद्धालु सांकल नृत्य करते हैं।
- गोगामेड़ी में एक हिन्दू व एक मुस्लिम पुजारी है।
- प्रतीक चिह्न - सर्प।
- खेजड़ी के वृक्ष के नीचे गोगाजी का निवास स्थान माना जाता है।
- गोगाजी की ध्वजा सबसे बड़ी ध्वजा मानी जाती है।
- 'गोगाजी की ओल्डी' नाम से प्रसिद्ध गोगाजी का अन्य पूजा स्थल - साँचौर
- गोगाजी से सम्बन्धित वाद्य यंत्र - डेरू
- किसान वर्षा के बाद खेत जोतने से पहले हल व बैल को गोगाजी के नाम की राखी गोगा राखड़ी बांधते हैं।
- सवारी - नीली घोड़ी।
- गोगा बाप्पा नाम से भी प्रसिद्ध है।

(2) पाबूजी राठौड़ -

जन्म - 1239 ई. में, जन्म स्थान - कोलुमण्ड गाँव (फलौदी) में हुआ ।
पिता - धाँधल जी राठौड़, माता - कमलादे,
पत्नी – फूलमदे / सुपियार दे सोढ़ी।

- फूलमदे अमरकोट के राजा सूरजमल सोढ़ा की पुत्री थी।
- पाबूजी की घोड़ी- केसर कालमी (यह काले रंग की घोड़ी उन्हें देवल चारणी ने दी, जो जायल नागौर के काछेला चारण की पत्नी थी)।
- सन् 1276 ई. में जोधपुर के देचू गाँव में देवलचारणी की गायों को जींद राव खींची से छुड़ाते हुए पाबूजी वीर गति को प्राप्त हुए, पाबूजी की पत्नी उनके वस्त्रों के साथ सती हुई। इस युद्ध में पाबूजी के भाई बूड़ोजी भी शहीद हुए।
- पाबूजी के भतीजे व बूड़ोजी के पुत्र रूपनाथ जी ने जींदराव खींची को मारकर अपने पिता व चाचा की मृत्यु का बदला लिया। रूपनाथ जी को भी लोकदेवता के रूप में पूजते हैं। राजस्थान में रूपनाथ जी के प्रमुख मंदिर कोलुमण्ड (फलौदी) तथा सिम्भूदड़ा (नोखा मण्डी, बीकानेर) में है। हिमाचल प्रदेश में रूपनाथ जी को बालकनाथ नाम से भी जाना जाता है।
- पाबूजी की फड़ नायक जाति के भील भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- फड़/पड़ - किसी भी महत्पूर्ण घटना या महापुरुष की जीवनी का कपड़े पर चित्रात्मक अंकन ही फड़/पड़ कहलाता है। फड़ का वाचन केवल रात्रि में होता है। फड़-वाचन के समय भोपा वाद्य यंत्र के साथ फड़ बाँचता है तथा भोपी संबंधित प्रसंग वाले चित्र को लालटेन की सहायता से दर्शकों को दिखाती है तथा साथ में नृत्य भी करती रहती है।
- राजस्थान में फड़ निर्माण का प्रमुख केन्द्र शाहपुरा है। वहाँ का जोशी परिवार फड़ चित्रकारी में सिद्धहस्त है। शांतिलाल जोशी व श्रीलाल जोशी प्रसिद्ध फड़ चित्रकार हुए हैं। यह जोशी परिवार वर्तमान में 'द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका' तथा 'कलिंग विजय के बाद अशोक' विशय पर फड़ बना रहा है।
- सर्वाधिक फड़ें तथा सर्वाधिक लोकप्रिय/प्रसिद्ध फड़ पाबूजी की फड़ है।
- रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- सबसे प्राचीन फड़, सबसे लम्बी फड़ तथा सर्वाधिक प्रसंगों वाली फड़ देवनारायण जी की फड़ है।
- भारत सरकार ने राजस्थान की जिस फड़ पर सर्वप्रथम डाक टिकट जारी किया वह देवनारायण जी की फड़ (2 सितम्बर, 1992 को 5 रु. का डाक टिकट) है।

- देवनारायण जी की फड़ गुर्जर जाति के कुँआरे भोपे जंतर वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- भैंसासुर की फड़ का वाचन नहीं होता है । यह **फड़** बावरी जाति में लोकप्रिय है। अपराध करने से पूर्व यह जाति इस **फड़** के दर्शन शगुन के रूप में करती है।
- रामदला-कृष्णदला की फड़ (पूर्वी राजस्थान में) एकमात्र ऐसी फड़ है जिसका वाचन दिन में होता है। इस **फड़** के **वाचन** में वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं **होता** है।
- शाहपुरा के जोशी परिवार द्वारा बनाई गई अमिताभ बच्चन की फड़ को बाँचकर मारवाड़ का भोपा रामलाल व भोपी पताशी प्रसिद्ध हुए।
- मारवाड़ में साण्डे (ऊँटनी) लाने का श्रेय पाबूजी को जाता है।
- पाबूजी 'ऊँटों के देवता', 'गौरक्षक देवता' तथा 'प्लेग रक्षक देवता' के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- पाबूजी को 'लक्ष्मण का अवतार' माना जाता है।
- ऊंटों की पालक जाति राईका/रेबारी/देवासी के आराध्य देव पाबूजी हैं।
- पाबूजी की जीवनी 'पाबू प्रकाश' के रचयिता आशिया मोड़जी ।
- हरमल व चाँदा डेमा पाबूजी के रक्षक थे।
- माघ शुक्ला दशमी तथा भाद्रपद शुक्ला दशमी को कोलुमण्ड गाँव (फलौदी) में पाबूजी का प्रसिद्ध मेला भरता है।
- पाबूजी के पवाड़े (गाथा गीत) प्रसिद्ध है, जो माठ वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं।
- प्रतीक चिह्न - भाला लिए हुए अश्वारोही तथा बायीं ओर झुकी हुई पाग।

(3) हड़बूजी -

- मारवाड़ के पंचपीरों में से एक हड़बूजी के पिता का नाम- मेहाजी सांखला (भुंडेल, नागौर)।
- हड़बूजी बाबा रामदेवजी के मौसेरे भाई थे।
- गुरु - बालीनाथ।
- संकटकाल में हड़बूजी ने जोधपुर के राजा राव जोधा को तलवार भेंट की और राव जोधा ने इन्हें बेंगटी (फलौदी) की जागीर प्रदान की।
- बेंगटी में इनका प्रमुख पूजा स्थल है। यहाँ हड़बूजी की गाड़ी (छकड़ा/ऊँट गाड़ी) की पूजा होती है। इस गाड़ी में हड़बूजी विकलांग गायों के लिए दूर-दूर से घास भरकर लाते थे।
- हड़बूजी शकुन शास्त्र के ज्ञाता थे।
- हड़बूजी की सवारी सियार मानी जाती है।

(4) रामदेवजी -

- रामसापीर, रुणेचा रा धणी व पीरां रा पीर नाम से प्रसिद्ध हैं ।
- रामदेव जी को कृष्ण का तथा उनके बड़े भाई बीरमदेव को बलराम का अवतार माना जाता है।
- पिता का नाम- अजमलजी तंवर, माता-मैणा दे, पत्नी- नेतल दे (नेतल दे अमरकोट के राजा दल्लेसिंह सोढा की पुत्री थी।)
- लोकमान्यता के अनुसार रामदेवजी का जन्म उंडूकाश्मीर गाँव (शिव-तहसील, बाड़मेर) में भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को हुआ।
- समाधि- रुणेचा (जैसलमेर) में रामसरोवर की पाल पर भाद्रपद शुक्ला दशमी को ली।
- रामदेवजी के लिए नियत समाधि स्थल पर उनकी मुँह बोली बहिन डाली बाई ने पहले समाधि ली।
- रामदेवजी की सगी बहिनें - लाछा बाई, सुगना बाई।
- रामसापीर उपनाम से प्रसिद्ध बाबा रामदेवजी ने अपने जीवन काल में कई परचे (चमत्कार) दिखाये। उन्होंने मक्का से पधारे पंचपीरों को भोजन कराते समय उनका कटोरा प्रस्तुत कर उन्हें चमत्कार दिखाया जिससे मक्का के उन पीरों ने कहा कि हम तो केवल पीर हैं, पर आप तो पीरों के पीर हैं।
- प्रमुख शिष्य- हरजी भाटी, आईमाता।
- गुरु का नाम-बालीनाथ। बालीनाथजी का मन्दिर- मसूरिया, जोधपुर ग्रामीण में।
- सातलमेर (पोकरण) में भैरव राक्षस का वध रामदेवजी ने किया।
- नेजा - रामदेवजी की पचरंगी ध्वजा।
- जातरु - रामदेवजी के तीर्थ यात्री।
- रिखियां - रामदेवजी के मेघवाल भक्त।
- जम्मा - रामदेवजी की आराधना में श्रद्धालु लोग रिखियों से जम्मा जागरण (रात्रि कालीन सत्संग) दिलवाते हैं।
- कुष्ठ रोग निवारक देवता।
- हैजा रोग के निवारक देवता।
- सवारी - लीला (हरा) घोड़ा।
- कामड़ पंथ का प्रारम्भ किया।
- राजस्थान में कामड़ पंथियों का प्रमुख केन्द्र पादरला गाँव (पाली) इसके अलावा पोकरण (जैसलमेर) व डीडवाना (डीडवाना-कुचामन) में भी कामड़ पंथी निवास करते हैं।
- तेरहताली नृत्य- रामदेवजी की आराधना में कामड़ जाति की महिलाएं मंजीरे वाद्य यंत्र का प्रयोग करके प्रसिद्ध तेरहताली नृत्य करती हैं।
- यह बैठकर किया जाने वाला एकमात्र लोकनृत्य है।
- तेरहताली नृत्य के समय कामड़ जाति का पुरुष तन्दुरा (चौतारा) वाद्य यंत्र बजाता है। इस नृत्य को करते समय नृत्यांगना तेरह मंजीरे (नौ दाहिने पांव पर, दो कोहनी पर तथा दो हाथ में) के साथ तेरह ताल उत्पन्न करते हुए तेरह स्थितियों में नृत्य करती है।
- तेरहताली नृत्य एक व्यावसायिक/पेशेवर नृत्य है।
- प्रसिद्ध तेरहताली नृत्यांगनाएँ - मांगीबाई, दुर्गाबाई ।

- इस प्रिंट में लाल व हरे रंग का प्रयोग होता है।
- इसमें दोनों तरफ से छपाई की जाती है ।
- यह छपाई दाबु प्रिंट के नाम से प्रसिद्ध है ।
- दाबु का तात्पर्य है - दबाना ।
- सवाई माधोपुर में मोम का दाबु प्रसिद्ध है ।
- गेंहु का बिछण सांगानेर, बगरू का प्रसिद्ध है ।
- मिट्टी का दाबु बालोतरा (बाड़मेर) का प्रसिद्ध है ।

गलीचा - यह कला मूल रूप से ईरान की है । राजस्थान में इसका प्रसिद्ध केन्द्र जयपुर व टोंक है।

नमदे - यह मुख्य रूप से टोंक व बिकानेर का प्रसिद्ध है।

दरियाँ - दरियों के लिए नागौर प्रसिद्ध है तथा दौंसा का लवाण गाँव भी प्रसिद्ध है ।

पत्थर की मूर्तियाँ- यह डूंगरपुर व बाँसवाड़ा के तलवाड़ा की प्रसिद्ध है। यहा परेवा पत्थर से मूर्तियाँ बनाई जाती है।

टेराकोटा से बनी मूर्तियाँ - इसके लिए डूंगरपुर का गलियाकोट प्रसिद्ध है इसी गलियाकोट में दाऊदी बोहरा समाज की छतरी भी है ।

मिनी वुड टैम्पल - यह बस्सी (चित्तौड़) का प्रसिद्ध है ।

कठपुतली उद्योग - यह उदयपुर का प्रसिद्ध है। कठपुतली कार्यक्रम का संचालन सम्पूर्ण भारत में लोक कला मण्डल उदयपुर के द्वारा किया जाता है ।

बगली पाली- लकड़ी के बर्तन बनाने के लिए प्रसिद्ध है।

उस्ता कला - ऊँट की खाल पर बारिक चित्रकारी व विभिन्न प्रकार की डिजाइनों को उस्ता कला कहते है ।

- इसके लिए बिकानेर प्रसिद्ध है । इसका प्रसिद्ध कलाकार हिसामुद्दीन था ।

नक्काशीदार फर्निचर - यह बाड़मेर का प्रसिद्ध है ।

छत्ता उद्योग - यह फालना (पाली) के प्रसिद्ध है ।

टायर-ट्युब उद्योग - यह कांकरोली (राजसमंद) का प्रसिद्ध है । रसगुल्ले, नमकीन व भुजिया बीकनेर की प्रसिद्ध है ।

गोटा उद्योग - यह उद्योग खण्डेला (सीकर), भिनाय (केकड़ी) व बस्सी (चित्तौड़) का प्रसिद्ध है ।

शरबत व सुगन्धित इत्र उद्योग - सवाई माधोपुर में पायी जाने वाली खस-खस से शरबत व सुगन्धित इत्र बनाये जाते है ।

तिलपट्टी उद्योग - तिलपट्टी व सूँघनी नसवार उद्योग ब्यावर जिले का प्रसिद्ध है ।

राजस्थानी भाषा

अध्याय - I

राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ

राजस्थानी भाषा-

- वक्ताओं की दृष्टि से भारतीय भाषाओं में राजस्थानी भाषा का 7 वां स्थान तथा विश्व की भाषाओं में राजस्थानी भाषा का 16वां स्थान है।
- उद्योतन सुरी ने 8वीं शताब्दी में अपने ग्रंथ कुवलयमाला में 18 देशी भाषाओं में मरु भाषा को भी सम्मिलित किया था।

उद्भव-

- डॉ. एल. पी. टेस्सीटोरी राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी गुर्जर अपभ्रंश से मानते है ।
- डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन एवं डॉ. पुरुषोत्तम मोनारिया राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) नागर अपभ्रंश से मानते है ।
- के. एम. मुंशी एवं मोतीलाल में नारिया राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से मानते है।
- अधिकांश विद्वान राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से मानते है ।

उत्पत्ति काल-

- राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति काल 12 वीं सदी का अन्तीम चरण माना जाता है।

स्वतंत्र अस्तीत्व-

- अपभ्रंश के मुख्यतः तीन रूप नागर, ब्राचड़ और उपनागर माने जाते है । नागर के अपभ्रंश से सन् 1000 ई. के लगभग राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति हुई ।
- राजस्थानी एवं गुजराती भाषा का मिला जुला रूप 16 वीं सदी के अंत तक चलता रहा है।
- 17 वीं सदी के अंत तक आते आते राजस्थानी पूर्णत एक स्वतंत्र भाषा का रूप ले चुकी थी ।

राजस्थानी भाषा का वर्गीकरण-

I. सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन का वर्गीकरण-

- सरजॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपनी पुस्तक या ग्रंथ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया के 9वें खण्ड में सन् 1912 में राजस्थानी भाषा का स्वतंत्र भाषा के रूप में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने वाले प्रथम व्यक्ति थे ।
- राजस्थानी भाषा या राजस्थानी बोलियों का पहली बार वैज्ञानिक अध्ययन जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने किया था।
- सरजॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने राजस्थानी भाषा को 5 बोलियों में वर्गीकृत किया है जैसे-

1. पश्चिमी राजस्थानी बोली (मारवाड़ी)-
2. उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी बोली-
3. मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली

4. दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी बोली
5. दक्षिणी राजस्थानी बोली

<u>पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख बोलियां –</u>

मारवाड़ी बोली-

- मारवाड़ी बोली का प्राचीन नाम मरुभाषा है ।
- मारवाड़ी बोली के साहित्यिक रूप को डिंगल कहते हैं।
- मारवाड़ी बोली का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से हुआ है ।
- मारवाड़ी बोली का उत्पत्ति काल 8 वीं सदी है।
- मारवाड़ी बोली पर सर्वाधिक प्रभाव गुजराती भाषा का रहा है ।
- मारवाड़ी बोली राजस्थान की प्राचीनतम बोली मानी जाती है ।
- मारवाड़ी बोली पश्चिमी राजस्थान की प्रधान या प्रमुख बोली है।
- मारवाड़ी बोली राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्रों में बोले जाने वाली बोली है ।
- जैन साहित्य एवं मीरा की अधिकांश पद इसी भाषा में लिखे गए है ।
- राजिये रा सोरठा, वेलि किसन रुकमणी री, ढोला-मारवण, मूमल आदि लोकप्रिय काव्य मारवाड़ी भाषा में ही रचित है।
- विशुद्ध मारवाड़ी (पुरी शुद्ध मारवाड़ी) बोली राजस्थान में जैसलमेर, बीकानेर, पाली, नागौर, जालौर , सिरोही, शेखावाटी, जोधपुर, व जोधपुर के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है।
- मारवाड़ी की उपबोलियां-
  1. गौड़वाड़ी
  2. देवड़ावाटी
  3. थली
  4. शेखावटी

गौड़वाड़ी- गौड़वाड़ी बोली राजस्थान में पाली एवं जालौर जिले के उत्तरी भाग में बोली जाती है ।

- बीसलदेव रासौ इस बोली की मुख्य रचना है ।

देवड़ावाटी- देवड़ावाटी बोली राजस्थान में सिरोही जिले में बोली जाती है ।

थली- थली बोली राजस्थान में बीकानेर, चुरू, बाड़मेर व जैसलमेर जिलों में बोली जाती है ।

शेखावाटी- शेखावाटी बोली राजस्थान में झुंझुनू, सीकर, नीमकाथाना तथा चूरू जिलों में बोली जाती है।

मेवाड़ी- मेवाड़ी बोली राजस्थान में भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद उदयपुर एवं उदयपुर के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है।

- मेवाड़ी, मारवाड़ी के बाद दूसरी महत्वपूर्ण बोली है।
- महाराणा कुंभा द्वारा रचित नाटकों में मेवाड़ी बोली का ही प्रयोग हुआ है।
- मेवाड़ी भाषा के विकसित रूप 12वीं - 13वीं शताब्दी में देखने को मिलते हैं।

वागड़ी- वागड़ी बोली राजस्थान में डूंगरपुर व बांसवाड़ा व दक्षिणी-पश्चिमी उदयपुर के पहाड़ी भाग में बोली जाती है । गुजरात के समीप होने के कारण वागड़ी बोली पर गुजराती भाषा का प्रभाव अधिक है। भील बोली बागड़ी की ही सहायक बोली है।

पूर्वी राजस्थान की प्रमुख बोलियां -

ढूंढाड़ी-

- ढूंढाड़ी, पूर्वी राजस्थान की बोली है।
- ढूंढाड़ी बोली राजस्थान के जयपुर, किशनगढ़ (अजमेर), टोंक तथा लावा (टोंक) तथा अजमेर मेरवाड़ा के पूर्वी अंचलों में बोली जाती है।
- ढूंढाड़ी में गद्य एवं पद्य दोनों में प्रचूर साहित्य रचा गया है ।
- संत दादू दयाल एवं उनके शिष्यों ने ढूंढाड़ी भाषा में रचना की ।
- ढूंढाड़ी बोली को जयपुरी बोली तथा झाड़शाही भी कहते है ।
- इसका बोली के लिए प्राचीनतम उल्लेख 18 वीं शताब्दी की 'आठ देस गुजरी' पुस्तक में हुआ है।
- ढूंढाड़ी बोली की उपबोलियां-
  1. हाड़ौती
  2. किशनगढ़ी
  3. तोरावाटी
  4. राजावाटी
  5. नागरचोल

हाड़ौती- हाड़ा राजपूतों द्वारा हाड़ौती राजस्थान के कारण कोटा, बांरा, बूंदी तथा झालावाड़ का क्षेत्र हाड़ौती कहलाया और यहाँ की बोली हाड़ौती, जो ढूंढाड़ी की ही एक उपबोली है ।

- हाड़ौती का भाषा के रूप में सर्वप्रथम प्रयोग केलॉग की हिन्दी व्याकरण में 1875 ई. में हुआ ।
- सूर्यमल्ल मिश्रण की रचना यें हाड़ौती बोली में ही है।
- वर्तनी की दृष्टि से हाड़ौती बोली राजस्थान की सभी बोलियों में सबसे कठिन समझी जाती है।

तोरावाटी- झुंझुनू जिले का दक्षिणी भाग, नीमकाथाना, सीकर जिले का पूर्वी एवं दक्षिणी – पूर्वी भाग तथा जयपुर जिले के कुछ उत्तरी भाग को तोरावाटी कहा जाता है तथा यहाँ बोली जाने वाली बोली तोरावाटी कहलाती है।

राजावाटी- राजावाटी बोली राजस्थान में जयपुर के पूर्वी भाग में बोली जाती है ।

नागरचोल- नागरचोल राजस्थान में सवाईमाधोपुर जिले के पश्चिमी भाग एवं टोंक जिले के दक्षिणी-पूर्वी भाग में बोली जाती है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/r46kn5 1 web.- https://shorturl.at/gilw7

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
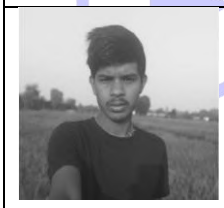	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
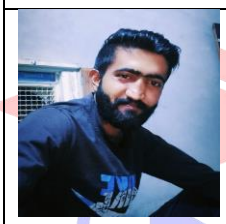	**Govinda Jangir**	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/r46kn5

Online Order करें - https://shorturl.at/gilw7

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE